TEACHERS OF BIHAR
The Change Makers
Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

दिसम्बर 2025 | अंक 16

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

padyapankaj.teachersofbihar.org

पद्यपंकज- दिसम्बर

"दिसंबर की ये ठंड, यादों का हिसाब लाई है,
नए साल की दस्तक, नई उम्मीदें साथ लाई है।
कलम उठाओ शिक्षकों, कि फिर एक नया इतिहास लिखना है,
बिहार की माटी को शिक्षा के प्रकाश से फिर से निखरना है।"

प्रिय पाठकों एवं शिक्षक साथियों,

दिसंबर की यह ठिठुरती शामें और साल की अंतिम बेला हमें पीछे मुड़कर देखने और आगे की राह चुनने का एक सुंदर अवसर देती हैं। 'पद्यपंकज' ई-पत्रिका का यह अंक उसी ढलते हुए सूरज की लालिमा और आने वाले कल की सुनहरी किरणों का एक संगम है।

'टीचर्स ऑफ बिहार' के लिए दिसंबर का यह महीना केवल साल का अंत नहीं, बल्कि हमारे शिक्षकों की उन उपलब्धियों का उत्सव है जो उन्होंने साल भर विद्यालय के प्रांगण में हासिल की हैं। इस अंक में संकलित रचनाओं में जहाँ एक ओर बीते वक्त की खट्टी-मीठी यादें और दिसंबर की विदाई की कसक है, वहीं दूसरी ओर 'नववर्ष 2026' के स्वागत का जोश और नए बदलावों का संकल्प भी है। जिस तरह प्रकृति पतझड़ के बाद नए पत्तों की तैयारी करती है, वैसे ही यह नया साल हमारे बिहार की शिक्षा व्यवस्था में नए प्रयोगों, नवाचारों (Innovation) और सकारात्मक ऊर्जा का संचार लेकर आए। हमारे शिक्षक साथी अपनी कलम और कर्म से एक ऐसे बिहार का निर्माण कर रहे हैं, जहाँ हर बच्चा शिक्षित हो और हर शिक्षक सम्मानित।

इस अंक की रचनाएँ आपको दिसंबर की ठंड में सुकून भी देंगी और आने वाले नए साल में कुछ नया कर गुजरने की प्रेरणा भी। आइए, पुराने साल की कमियों को पीछे छोड़ते हुए, नए साल में शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति और बदलाव की ओर कदम बढ़ाएं।
आप सभी को दिसंबर की विदाई और नूतन वर्ष की अग्रिम हार्दिक शुभकामनाएँ!

सृजन और परिवर्तन के पथ पर अग्रसर,
टीम - टीचर्स ऑफ बिहार

पद्यपंकज काव्य संग्रह

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

राम किशोर पाठक

प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा

संपादक एवं डिजाइन

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

प्रधान संपादक की कलम से

शीत लहर के संग में, गया दिसम्बर बीत।
हृदय पुष्प है खिल रहा, कवियों के कुछ गीत।।
ज्ञानी पीछे छूटते, क्रय होता सम्मान।
कहती है अब लेखनी, सोचें जरा सुजान।।

मित्रों! दिसम्बर माह में शीत ऋतु अपने यौवन काल का परिचय दे रहा होता है। सभी उष्ण कपड़ों से लिपटे, रजाई, कंबल ओढ़े तथा अलाव तापते नजर आते हैं। इन विषम परिस्थितियों में भी कवि हृदय की कल्पनाशीलता विभिन्न विषयों को स्पर्श करती रही है। हम उन्हीं कल्पनाओं में से कुछ मोती निकाल कर आपके सामने पद्यपंकज पत्रिका के इस दिसम्बर अंक में लाएँ हैं।

इस अंक की रचनाओं में एक तरफ सर्दी के विभिन्न आयामों से परिचित होंगे तो वहीं दूसरी तरफ सम्मान समारोह में भी बाजारवाद और भ्रष्टाचार के प्रसार से भी आप रू-ब-रू होंगें। कलमकारों ने हमेशा ही समाज को साहित्य के रूप में सत्य का आईना दिखाया है, आपको इस अंक से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। हम इस भीषण शीत लहर से बचाव का कोई उपाय भले ही न करें परन्तु पत्रिका के इस अंक से आप के आत्मबल को ऊष्मित अवश्य करने का प्रयास करेंगे जिससे शीत ऋतु की अनुभूति कम होगी।

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आपको खूब पसंद आएगी। तथापि कोई त्रुटि एवं सुझाव आप सुधि पाठकों के हृदय में आए तो उसे प्रेषित कर अनुगृहित करें, जिससे हम आने वाले अंक को और अधिक उत्कृष्ट बना सकें। जिस प्रकार हीरे को तराश कर ही चमकाया जाता है, उसी प्रकार आपकी प्रदत समीक्षा पत्रिका को नयी ऊँचाई पर ले जाएगी।

नववर्ष २०२६ की असीम शुभकामनाओं के साथ।

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।
संपर्क - 9835232978

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है—जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ रश्मि प्रभा

संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,

विद्यालयी शिक्षा विभाग

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	शुभ भोर	रामपाल प्रसाद सिंह	8
2	मुझे पढ़ाओ पापा	बिंदु अग्रवाल	9
3	जिंदगी का सच	अमरनाथ त्रिवेदी	10
4	सर्दी का असर	भवानंद सिंह	11
5	नए वर्ष की नयी उम्मीदें	रुचिका	12
6	शीत लहर	ब्यूटी कुमारी	13
7	चाहता चरण धूल	जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'	14
8	कोहरा	राम किशोर पाठक	15
9	बचपन	ममता तिवारी	16
10	कविता-बाल मनुहार	अमृता कुमारी	17
11	जाड़े की धूप	मोहम्मद आसिफ इकबाल	18
12	जीवन और जल	गिरीन्द्र मोहन झा	19
13	धन्यवाद टीचर्स ऑफ बिहार	एम० एस० हुसैन "कैमूरी"	20
14	That one of the Worst feelings	Aashish Kumar Pathak	21
15	संपूर्ण ज्ञान	अश्मजा प्रियदर्शिनी	22
16	समय	बैकुंठ बिहारी	23
17	रजिस्ट्रेशन के नाम पर सौदा?	ओम प्रकाश	24
18	मत मारो न पापा	अवनीश कुमार	25

शुभ भोर

शुभ भोर हो गया उजियारा।
मनमोर नाचता है प्यारा।।
“अनजान”साँस भरपूर लिए।
अनमोल ज्ञान भरपूर दिए।।

खग जाग भाग कर गगन छुए।
पशु दौड़ भाग कर मगन हुए।।
कितना लहलह नभ भाल अरुण।
कितना महमह खग बाल तरुण।।

ऋषि देख गगन को नाच रहें
उपदेश मगन हो वाँच रहें।।
चल निकल चलें ब्राह्मीवेला।
फिर देख ब्रह्म अद्भुत खेला।।

निकलें हम इसका भोग करें।
चलकर फिरकर कुछ योग करें।।
जो देर समय उठ जाते हैं।
पत्थर पर बीज उगाते हैं।।

रामपाल प्रसाद सिंह ‘अनजान’
पूर्व प्र०म०विद्यालय दर्वेभदौर

मुझे पढ़ाओ पापा

मुझे आगे बढ़ाओ पापा
हाँ मुझे पढ़ाओ पापा।
न दो मुझे उंगली का सहारा
मुझे चलना सिखाओ पापा।

किताबों का दो उपहार मुझे
दहेज न तुम जमाओ पापा।
मैं भी तो तुम्हारा हिस्सा हूँ
ज्ञान से मुझे सजाओ पापा।

सक्षम इतना बनाओ मुझे
न औरत होने का कलंक मिले
न दहेज लोभियों के हाथों
जलता शरीर जीवंत मिले

बेटी हूँ तो क्या हुआ ???
मैं तो किसी पर बोझ नही।
छोड़ जमाना,डालो पापा
तुम अपने अंदर सोच नई।

हाँ मैं तन से कोमल हूँ,
पर मैं तो कमजोर नही।
मै भी बनकर सूरज चमकूँ,
लाऊं जग में भोर नई।

आसमान में बन ध्रुव तारा
मैं जग को राह दिखाऊंगी।
शिक्षा की ज्योति से जगमग हो
मैं प्रकाश फैलाऊंगी।

बिंदु अग्रवाल
शिक्षिका मध्य विद्यालय गलगलिया
किशनगंज बिहार

जिंदगी का सच

जिंदगी आज है कल नही मिलेगी,
दुनिया तो इसी तरह चलेगी।
बहकावे में न तू किसी के आना,
तभी तो बहारें खुशियाँ मिलेंगी।

जमाने महफ़िल शोर है ज्यादा,
भूलो न कभी तुम अपना वादा।
जिंदगी भर तो जीना पड़ेगा,
न बदलो कभी अपना इरादा।

सारे जहां खुश तो खुशी भी सच्ची,
खुद की खुशी कभी होती नही अच्छी।
जमाने की रंगत जमाने की दौलत,
मिलती प्रीति एक–सी नही सच्ची।

जीवन में कर लो सोच समझ के वादा,
टलना उससे कभी नही है।
फिकर न हो सूनी राहें तनिक भी,
कभी मिलकर बिखरना सही नही है।

कर लो विश्वास अपने रब पर जरा सा,
सदा मर्जी अपनी चलती नही है।
रब की इनायत ज़ब होती तुम पर,
तभी तो तेरी बुद्धि चलती सही है।

भरोसे के लायक न जिंदगी है किसी की,
कल क्या होगा कुछ भी पता नही है।
मिलना वही जो नसीबो में लिखा है,
पहले जिसका अता– पता नही है।

जिओ जिंदगी को ऐसे प्यारे,
न किसी का तुम पर विश्वास डगमगाए।
भरोसा न कही इस जिंदगी का
तेरा न मन कभी घबराए।

जो होना होगा वही तो होगा,
न डरना इसमें कभी नही है।
अपने जो कर सकते हो प्यारे,

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा, जिला मुजफ्फरपुर

सर्दी का असर

शीत का असर देखो,
सब पे बराबर है,
बिछावन पर दुबके, ओढ़े कम्बल है।

सर्द हवा चल रही,
ठिठुर रहा तन है,
हो रहा बचाव उनका,जो सबल है।

दिन दीनों के कटता,
जिसे कपड़े कम है,
ऐसे लोगों का,अलाव पर ही बल है।

सड़कें वीरान पड़ी,
धुंध का कहर बड़ी,
लग रहा जैसे यह इलाका चम्बल है।

भवानंद सिंह (शिक्षक)
मध्य विद्यालय मधुलता
रानीगंज, अररिया

नए वर्ष की नयी उम्मीदें

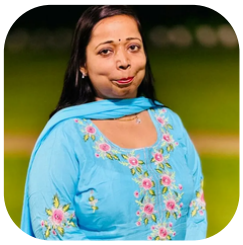

देखो,
फिर ठिठुरते,कंपकंपाते
दिसंबर की सर्द रातों संग
ये वर्ष अपनी अंतिम साँसें ले रहा है
और
फिर हमारे सोचों का सिलसिला
जनवरी से लेकर
दिसंबर तक की गणित में उलझा
यह हिसाब लगा रहा है।
क्या था जो अधूरा रह गया
क्या था जो पूरा होकर
यादों में बस गया
और क्या है
जिसकी ख्वाहिशें बस अभी
जेहन में ही रह गयी है।
सुनो,
दिसंबर की सर्द रातों में
कुछ अनकहे दर्द
से ये गुजारिश चल रही है
नही आना फिर जनवरी में।
लौट जाना दिसंबर संग।
ताकि जनवरी के नए वर्ष होने का
भरम बना रहे।
और स्वागत करें
नए वर्ष का
खुले दिल से
बाँहें फैलाये।

रूचिका
प्रधान शिक्षिका
प्राथमिक विद्यालय कुरमौली,
गुठनी सिवान बिहार

शीतलहर

शीतलहर
सर्द हवा की कहर,
चल रही शीतलहर।
गात को कंपा रहा,
दीन को सता रहा,
सूना पड़ा है डगर।
सर्द हवा की कहर,
चल रही शीतलहर।
छाया घना कोहरा,
किसान खेत में मगर,
ठंड से बचा रहा अनल।
सर्द हवा की कहर,
चल रही शीतलहर।
सूरज का आभा हुआ कल्पना,
धरा पर बिछा ओस की चादर,
कप- कपा रहा बदन।
सर्द हवा की कहर,

ब्यूटी कुमारी,
प्रधान शिक्षक
प्रा.वि. ज्याजपट्टी,
दलसिंहसराय ,समस्तीपुर

चाहता चरण धूल

नही माँगता हूँ धन,
भरा पूरा परिजन,
भावना सहित तन-मन हो समर्पित।

पास नही फल-फूल,
चाहता चरण धूल,
श्रद्धा सुमन तुझको करता हूँ अर्पित।

तेरी करूणा कि आस,
मन में लिए विश्वास,
कभी तो दरस प्रभु, दोगे मुझे किंचित।

नही देना पद-मान,
जिससे हो अभियान,
वही मुझे देना नाथ, जिसमें हो मेरा हित।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
पूर्व शिक्षक

कोहरा

उल्लाला छंद गीत

सभी लोग हैं काँपते, सर्दी सबको खल रही।
फैल गया है कोहरा, दृष्टि सभी की छल रही।।

मुश्किल होता देखना, आस-पास में भी यहाँ।
वाहन भी टकरा रहें, बढ़ जाती है गति जहाँ।।
रेंग-रेंगकर गाड़ियाँ, देखो कैसे चल रही।
फैल गया है कोहरा, दृष्टि सभी की छल रही।।०१।।

सर्द हवा के तीर से, घायल होते लोग हैं।
गर्म-गर्म कपड़े सभी, करते सब उपयोग हैं।।
सबकी आशा में अभी, गर्म पेय प्रति पल रही।
फैल गया है कोहरा, दृष्टि सभी की छल रही।।०२।।

बाहर जाना छोड़िए, शीतल सर्द समीर में।
छुपकर रहना है भला, लगे न ठंड शरीर में।।
जो चपेट में आ गए, उनको हर-पल सल रही।
फैल गया है कोहरा, दृष्टि सभी की छल रही।।०३।।

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला
बिहटा, पटना, बिहार।

बचपन

ना ही किसी की फिक्र है, ना ही किसी का जिक्र हैं,

करते हरदम अपने मन की, यही उमर हैं बचपन की।

तुरंत रूठना तुरंत मान जाना, लड़ना झगड़ना ओर मनाना,

किसी बात को नही दिल से लगाते

यह वो फ़रिश्ते है, जो रोते हुए को भी हँसाते।

करते हरदम अपने मन की, यही उमर है बचपन की।

रब दिखता है इनकी सूरत में, खुश रहते हैं हर हालत में,

ना ही किसी से दोस्ती, ना ही किसी से बैर

मन चाही चीजें न मिले तो होती नही है खैर।

निडरता, निर्भीकता, बहादुरी है इनकी पहचान,

इनसे शिक्षा ले सकता हैं दुनिया का हर इंसान।

करते हरदम आपने मन की यही उमर है बचपन की।

ना ही किसी का फिक्र है, ना ही किसी का जिक्र हैं

ममता तिवारी
शिक्षिका, बिहार

कविता-बाल मनुहार

मां यह मुझे बता दे!
आसमान क्यों है नीला
कैसे उड़ लेती है चिड़ियां
इस नील गगन में ऊपर
झरनों में आता जल किधर से
जो बहती है कल कल
सूरज दादा क्यों चमकते
इतनी दूर है फिर भी!!
हां मां, यह भी कह दे,,
चंदा मामा ही क्यों कहलाते
काका, बाबा नही क्यों!
तारे टिम टिम आसमान में
रातों को ही करतें!!
सर सर करती हवा जो चलती
क्यों न हमको दिखलाई पड़ती ,
क्या है राज इन सब के पीछे
मां आज तू बतला दे!

अमृता कुमारी
विद्यालय अध्यापक
उच्च माध्यमिक विद्यालय बसंतपुर सुपौल

जाड़े की धूप

दुनिया के सारे इंसान
बच्चे बूढ़े और जवान
देखो कितनी ठंड पड़ी
ठिठुर ठिठुर सब हैं परेशान।।

अब तो एक ही आस है
थोड़े जलावन जो पास है
जला के इसको तापेंगे
फिर तापमान मापेंगे।।

फिर भी ठंड न जाएगी
याद हमारी आएगी
सूरज दादा अब आ भी जाओ
जाड़े की धूप से हमे गर्माओ।।

कितना पीएं गर्म सूप
चाहिए अब जाड़े की धूप
भटक रहे सब निः सहाय
काम न आए गर्म चाय।।

हर तरफ धुआं सा छाया
चारों ओर कुहासा आया
ठंड से सभी का हुआ बुरा हाल
नाक भी हो गए सबके लाल।।

अब रुसा-रूसी छोड़कर
बादलों की छत तोड़कर
लेकर तुम भगवान का रूप
आ जाओ जाड़े की धूप।।

मोहम्मद आसिफ इकबाल
विशिष्ठ शिक्षक उर्दू
राजकीय बुनियादी विद्यालय उलाव बेगूसराय बिहार

जीवन और जल

जीवन और जल
कहते भी हैं, जल ही जीवन है,
जीवन वही, जैसा तन-मन है,
जीवन मानो तो ईश्वर का वर है,
है यह जल के सदृश, चर-अचर है,
तुम इसे जैसी आकृति देना चाहो, दे दो,
तुम इसे जैसा भी बनाना चाहो, बना लो,
कल्पना से, कर्म से, उद्योग से, दृढनिश्चयी प्रयास से,
योग, ज्ञान, श्रेष्ठ अनुभव, विचार से, सतत अभ्यास से,
जीवन को तो बहती नदी-सा ही होना चाहिए,
इसे सतत, निर्विघ्न आगे बढ़ना चाहिए,
मार्ग में कोई ईति भी कभी आ जाय,
उसे हटाकर या और मार्ग बनाकर,
लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़े जाना चाहिए।

गिरीन्द्र मोहन झा
पूर्व शिक्षक

धन्यवाद टीचर्स ऑफ बिहार

है कोटि-कोटि धन्यवाद
ऐ टीचर्स ऑफ बिहार
तेरे बदौलत ही सबका
होता है सपना साकार
रचनाएं दब सी जाती थी
होता न था प्रचार प्रसार
लिखना शुरू मैंने किया
तुने दिया है , इसमें धार
लेखनी में होती जो त्रुटियां
यहां सबका होता है सुधार
टीओबी की प्रकाशन टीम
सदैव ही , रहती है तैयार
टीम के अथक प्रयास से
हुआ दो साईट का विस्तार
पद्य पंकज व गद्य गुंजन से
होती है रचनाओं का प्रसार
धन्य है ,उनकी सक्रिय सोच को
किए जो TOB का अविष्कार
जिसमें हम शिक्षक कवियों की
लिखित रचना का होता है प्रसार
स्वयं को Google में पाकर के
मेरा मन प्रफुल्लित हुआ अपार
धन्य है , समस्त टीम टीओबी
धन्य है मेरा टीचर्स ऑफ बिहार

एम० एस० हुसैन "कैमूरी"
शिक्षक
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
छोटका कटरा
मोहनियां कैमूर बिहार

That one of the Worst feelings

One of the Worst feelings in the world,
is to see your parents age
because nothing really prepares,
You for that inevitable
That one moment you look up to them,
as strongest strongest people in your life,
You look up to them
for emotional safety and protection,
those guidance and those direction
and before you know and feel it,
their hair is white and they start looking feeble,
and they start depending on you instead,
They took Care of you,
When you were kids
but before your eyes they are the kids now,
But it's the time for us to step up
but life gets so busy
and jobs so demanding,

You are in a different city
Or a different country even,
and now you constantly start wondering,
are my parents happy?
Your happiness was their life,
Who are they talking to
Who are they spending time with?
Are they by themselves at home?
and you start desire that someone,
Who is next version of me with them,
give them that all the companionship
and those necessary fulfillment
but that's not squarely possible
So,talk to them as they talked with you,
When you were kids,
Spend more and more time with them,
Like they had spent with you
But God that's the worst feelings
To see your parents aging.

Ashish Kumar Pathak
Incharge Hm
Middle School Sarha
Dharhara
Munger
Bihar

संपूर्ण ज्ञान

संपूर्ण ज्ञान प्रदाता पुस्तक है सरस्वती समान।
यह सर्वश्रेष्ठ पर प्रदर्शक विज्ञता जीवन में प्रधान।
शास्वत जग ब्रह्मांड का विवरण देता है,
कालचक्र की समस्त घटना का मान्य करता बखान।
पुस्तक में है दिव्य जोत जैसे ब्रह्मा, विष्णु महेश।
नीतिशास्त्र का संग्रह और इतिहास के अवशेष।
वेद-पुराण, विविध धर्म ग्रंथों का ये खजाना है,
समग्र घटना का संकलन,हर क्षेत्र में है विशेष।
पुस्तक में होते अनेक अनुपम प्रकरण विषयक चित्र।
ये हमारे सच्चे, श्रेष्ठ मार्गदर्शक और उत्तम मित्र।
चरित्र निर्माण, युग संचालन का ये परिचायक है,
धर्मशास्त्रों में इसकी महिमा अद्भुत एवं अत्यंत पवित्र।
पुस्तक वर्णित होता है समस्त ज्ञान का आख्यान।
जानकारी पाकर सूचना का होता व्याख्यान।
तन्त्र -मंत्र की शक्ति, देशभक्ति का होता आह्वान है,
श्रद्धा सूचक हैं वेद, गीता, त्रिपिटक और पुराण।
पुस्तक के साथ का अध्यापन नित दिन करता प्राणी।
इसकी महिमा निराली,लय में संतों की वाणी।
अधुरा ज्ञान अर्जित कर मूढ़ पापी बन जाता है।
धार्मिक ग्रंथों में वर्णित, यज्ञोपवीत, विवाह अनुष्ठान।
ज्ञान के सागरों में दीपशिखा बनते प्रतिष्ठान।
मंत्र, दोहा, चौपाई छंदों,कथा का सार है,
वाल्मीकि ने रामायण लिखी, लव-कुश ने किया गान
गीता वेद पुराण के मर्म से जग को आशा है।
पुस्तक है अप्रतिम,व्यापक इसकी परिभाषा है।
विविध पुस्तक में समाहित, ज्ञान का अनुपम भंडार,
हिन्दी साहित्य गौरवान्वित हो, यही अभिलाषा है।

अश्मजा प्रियदर्शिनी
हेड टीचर
प्राथमिक विद्यालय
धमौल,धनरुआ
पटना,बिहार

समय

समय है सबसे शक्तिशाली,
समय है बड़ा बलवान,
समय की हर एक घड़ी का,
करना है सम्मान,
समय ही किसी को राजा बनाता,
समय ही किसी को रंक बनाता,
समय है सर्वश्रेष्ठ,
समय ही किसी को प्राण देता,
समय ही किसी के प्राण लेता,
इस पूरे ब्रह्मांड का, ऑक्सीजन है समय,
समय न किसी की प्रतीक्षा करता,
न किसी को समय देता,
समय है क्षणभंगुर,
समय ही है किसी को प्राप्त करने का मार्ग,
समय है अनमोल रतन,
समय है अनमोल धन।।

बैकुंठ बिहारी
स्नातकोत्तर शिक्षक
कम्प्यूटर विज्ञान उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय सहोड़ा गद्दी कोशकीपुर

रजिस्ट्रेशन के नाम पर सौदा?

रजिस्ट्रेशन के नाम पर सौदा?
सम्मान के बदले भुगतान?
पुरष्कार खरीद रहे हैं आप?
कहाँ है आपका आत्मसम्मान?

काग़ज़ी ट्रॉफियाँ,
ख़रीदे गए मंच,
मतलबी तारीफ़ों के साथ
गुरु नही, ग्राहक खड़े हैं।
शिक्षा के आँगन में,
नकली दीपक जला रहे हैं,
रोशनी कम,
धुआँ ज़्यादा फैला रहे हैं,
सच्चे प्रयासों की शक्ति को
धूमिल करते जाते हैं,
ये दीपक दिशा नही दिखाते,
बस आँखें चौंधियाते हैं।
हम ही वो शिक्षक हैं,
जिन्होंने बच्चों को
ईमानदारी का पाठ पढ़ाया,
वो पाठ अब हम भुला रहे हैं।

सम्मान वो होता है
जो माथे पर चमके,
जो दिल को खुशी दे,
जेब पर बोझ ना बने।

सम्मान देना है
तो निःशुल्क दीजिए,
सेवा करनी है
तो शर्त मत रखिए,
क्योंकि गुरु का मूल्य
पैसों से नही,
प्रभाव से तय होता है।
आज नही बोले
तो कल बच्चे सीखेंगे
कि इज्ज़त खरीदी जाती है।
इसलिए यह केवल विरोध नही,
एक संकल्प है
सम्मान के बाजारीकरण को रोकने का।

ओम प्रकाश
म० वि० दोगच्छी, भागलपुर

मुझे मत मारो न पापा

मुझ प्यारी बिटिया के लिए लोरी बनाओ न पापा।
धीमे सुरों में मुझे सुलाओ न पापा,
अपनी बाहों में भरकर झूला झुलाओ न पापा।
गुनगुन गुनगुन गुनगुनाओ न पापा।
गुनगुन गुनगुन गुनगुनाओ न पापा।

प्यार भरी किस्से सुनाओ न पापा,
मेरे सपनों में रंग भर जाओ न पापा।
राजकुमारियों की कहानियों में
मेरे हिस्से का राजकुमार भी लाओ न पापा।
अपने मीठे-मीठे बोल मुझे भी सुनाओ न पापा
गुनगुन गुनगुन गुनगुनाओ न पापा।
गुनगुन गुनगुन गुनगुनाओ न पापा।

डाँट से नही, प्यार से मुझे भी समझाओ न पापा।
मैं रूठूँ तो मुझे जल्दी से मना लो न पापा,
दुनिया से पहले मेरा साथ निभाओ न पापा।
जरा प्यार से बिटिया को रानी बिटिया बुलाओ न पापा,
गुनगुन गुनगुन गुनगुनाओ न पापा।
गुनगुन गुनगुन गुनगुनाओ न पापा।

मुझे भी प्यार-भरा कई नाम दो न पापा।
मुझ पर जरा इतराओ न पापा,
मेरी छोटी-छोटी शरारतों पर
बंद होठों से ही मुस्काओ न पापा
गुनगुन गुनगुन गुनगुनाओ न पापा।
गुनगुन गुनगुन गुनगुनाओ न पापा।

मेरे सपनों के भी पंख हैं।
इन्हें मत काटो न पापा।
मेरे आँसू भी मोतियों जैसे हैं,
इन्हें यूँ अनदेखा मत जाने दो न पापा।
बस एक बार...
बस एक बार...
लाडली बिटिया कहो न पापा,
दिल के सिंहासन पर बिठाओ न पापा।
अपने घर की बगिया का फूल बनाओ न पापा,
मेरे होने से आँगन महकाओ न पापा
गुनगुन गुनगुन गुनगुनाओ न पापा।

पापा...
पा...पा...
पापा...
मुझे मत मारो न पापा,
मेरे सपनों को मत मारो न पापा।
मेरी साँसों को चलने दो न पापा,
मेरी धड़कनों को धड़कने दो न पापा
मुझे जीने दो न पापा
मुझे दुनिया को देखने दो न पापा
मुझे भी गुनगुन गुनगुन गुनगुनाने दो न पापा।
मुझे भी गुनगुन गुनगुन गुनगुनाने दो न पापा।

अवनीश कुमार
बिहार शिक्षा सेवा (शोध व अध्यापन उपसंवर्ग)

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com

padyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010

Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें